[This question paper contains 6 printed pages.]

(12) **Your Roll No.** 2022

Sr. No. of Question Paper : 3204 **A**

Unique Paper Code : 12057609

Name of the Paper : Bhartiye Sahitya : Pathparak Adhyayan

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (10×3=30)

(क) देखकर तब विकल क्रौंची,

व्याध-चरित-अधर्म,

बह चली वाणी सहज

ले द्रवित उर का मर्म!

Deshbandhu College Library, Kalkaji, New Delhi-19

P.T.O.

क्रौंच के उस मुग्ध जोड़े से

किया हत, एक,

तू न पायेगा प्रतिष्ठा व्याध!

वर्ष अनेक.

अथवा

कहलवाया है -

सिलेटी पत्थर पर गेरू आदि से

करता हूँ तैयार आँक-आँक के

प्यार में रूठी हुई आकृति तुम्हारी.

फिर मनाने के निमित्त

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

तुम्हारे पैरों पर गिरते हुए

दिखाना चाहता हूँ अपने को उसी में।

कि इतने में उमड़ आते हैं अपरिमित आंसू ,

लुप्त हो जाती है दृष्टि की क्षमता,

कर सकता सहन नहीं निठुर विधाता

इस प्रकार भी हमारा मिलना-जुलना।

(ख) लोभ लहर अति नीझर बाजे, काइआ डूबै केसवा ।।1।।

संसारु समुंदे तारि गोविंदे। तारिलै बाप बीठुला ।।1।

अनिल बेड़ा हउ षेंवि रे साकउ। तेरा पारु न पाइया बीठूला ।।2।।

होहु दइआलु संति गुरु मेलि तू। मोंकउ पारि उतारे केसवा ।।3।।

नामा कहे हउ तरिभि न जानउ । मोकउ बाह देहि बाह देहि बीठुला।।4।।

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

आतप से लोगों को बचाने के लिए अपना हरित छत्र

दूर तक फैलाकर खड़े उस अश्वत्थ की वेदी से,

जब तुम, सखियों से छिपाकर, बार-बार

अपने दीर्घ लोचनों की तीक्ष्ण धार से

नातिदूर खड़े मेरे ललाट पर

कुछ शुभाक्षर लिख रही थी, तब

मेरी पलकें गिर गयी और इस तरह उस शुभ मुहूर्त की

कुछ कड़ियों में मैंने स्याही लगा दी!

स्पष्ट प्रकाशमान सूर्य-किरणों में भी

जहाँ-तहाँ मनुष्य लोक दाग लगा देता है.

(ग) आज क्या हस्तिनापुर का सत्यासत्य का विवेक सचमुच ही समाप्त हो गया है? क्या आज हस्तिनापुर में न्याय-अन्याय की लौ बुझ गयी है? इस हस्तिनापुर में क्या किसी में इतनी शक्ति नहीं,जो इस कर्ण के भग्न हृदय की चीत्कार को सुन सके? किसी में इतनी शक्ति नहीं है जो इस कर्ण के तड़पते हुए मन को पहचान सके? महाराज मनु का यह हस्तिनापुर, पराक्रमी नहुष का हस्तिनापुर, दिग्विजयी ययाति का हस्तिनापुर, शांतनु, दुष्यंत और भरत का हस्तिनापुर और जिनकी स्मृति का नगरजन अभी तक नहीं भूले हैं, जिनका प्रस्थान अभी कुछ दिन पूर्व ही हुआ है, उन गुरु का हस्तिनापुर आज इतना ठंडा और विवश - सा क्यों है? आज अन्याय को ठोकर मारने के लिए वह धैर्यपूर्वक छाती ठोंक कर खड़ा क्यों नहीं होता ?

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

पत्र पढ़कर वे कुछ दुःख के साथ बोले, "अंग्रेज हमें खुशामदी

और स्वराज के लिए नालायक कहते हैं, यह यों ही थोड़े ही कहते हैं। ऐसे पत्र में तुम मोली की विद्वता के और दार्शनिक वृति के इतने गुणगान करते हो, यह अनुचित है। और उन्हें पत्र लिखने में तुम्हारे हाथ और कलम काँपने क्यों चाहिए? तुम्हें तो एक व्यावसायिक पत्र लिखना है। उसने फार्बेस सभा में इस काम के लिए तुम्हें किस तरह पसंद किया और तुमने बहुत ध्यान से अनुवाद किया है इतनी ही बातें आनी चाहिए।"

2. 'उत्तर मेघ' के आधार पर कालिदास की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

राम कथा के जन्म से सम्बंधित प्रेरक तत्वों का विवेचन कीजिये।

3. रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित 'भारत तीर्थ' कविता में मौजूद राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना को स्पष्ट कीजिये। (15)

अथवा

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

'ललद्यद शैव मत की सच्ची साधिका हैं' इस कथन के आलोक में ललद्यद के वाख पर विचार कीजिये।

4. 'खून का रिश्ता' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। [15]

Deshbandhu College Library
Kalkaji, New Delhi-19

अथवा

'हयवदन नाटक की मूल समस्या का विस्तृत विवेचन कीजिये